नव भारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

भाजपा के लिए आत्ममंथन का अवसर

बिहार की बांकीपुर और मध्यप्रदेश की दतिया विधानसभा सीटों पर भाजपा की हार को केवल दो उपचुनावों का परिणाम मानकर नजरअंदाज करना राजनीतिक दृष्टि से उचित नहीं होगा. उपचुनाव अक्सर स्थानीय परिस्थितियों से प्रभावित होते हैं, लेकिन कई बार वे जनभावनाओं और संगठन की वास्तविक स्थिति का संकेत भी देते हैं. इन दोनों सीटों के नतीजों ने भाजपा के सामने कुछ ऐसे प्रश्न खड़े किए हैं, जिन पर समय रहते गंभीर आत्ममंथन आवश्यक है.

भाजपा की सबसे बड़ी ताकत उसका मजबूत संगठन और समर्पित कार्यकर्ता रहा है. यही कार्यकर्ता चुनावों में पार्टी की रीढ़ बनता है. किंतु हाल के महीनों में कुछ ऐसे घटनाक्रम सामने आए, जिन्होंने कार्यकर्ताओं और पारंपरिक समर्थकों के एक वर्ग में असहजता पैदा की. अयोध्या चंदा चोरी प्रकरण, यूजीसी की नई गाइडलाइन को लेकर उठे विवाद तथा नीट पेपर लीक जैसे मुद्दों ने विशेष रूप से उस मध्यमवर्गीय समाज को प्रभावित किया, जिसे भाजपा का कोर वोट बैंक माना जाता है. यह वर्ग केवल चुनावी वादों से नहीं, बल्कि सुशासन, पारदर्शिता और जवाबदेही की अपेक्षा भी रखता है.

नीट पेपर लीक का मामला करोड़ों छात्रों और उनके अभिभावकों के विश्वास से जुड़ा विषय बन गया. इसी प्रकार शिक्षा से संबंधित नीतियों पर उठे सवालों ने युवाओं और शिक्षित मध्यम वर्ग के बीच चर्चा को जन्म दिया. अयोध्या जैसे आस्था के केंद्र से जुड़ी नकारात्मक खबरों ने भी अनेक समर्थकों को निराश किया. यह कहना अतिशयोक्ति होगा कि इन्हीं कारणों से चुनावी हार हुई, लेकिन यह अवश्य कहा जा सकता है कि इन घटनाओं ने पार्टी के समर्थक वर्ग के मन में कुछ असंतोष और प्रश्न अवश्य पैदा किए. बांकीपुर का परिणाम एक और महत्वपूर्ण संकेत देता है. लंबे समय से मजबूत मानी जाने वाली सीटों पर यदि संगठन यह मानकर चलने लगे कि जीत स्वतः सुनिश्चित है, तो अति आत्मविश्वास नुकसानदेह सिद्ध हो सकता है. लोकतंत्र में कोई भी सीट स्थायी रूप से सुरक्षित नहीं होती. प्रत्येक चुनाव में मतदाताओं तक उसी ऊर्जा, विनम्रता और प्रतिबद्धता के साथ पहुंचना पड़ता है, जिसने कभी भाजपा को राष्ट्रीय स्तर पर सफलता दिलाई थी.

दतिया का परिणाम भी बताता है कि केवल सरकार की उपलब्धियां पर्याप्त नहीं होतीं. स्थानीय संगठन की सक्रियता, कार्यकर्ताओं का उत्साह, उम्मीदवार की स्वीकार्यता और जनता से निरंतर संवाद भी उतने ही महत्वपूर्ण होते हैं. यदि कार्यकर्ता स्वयं उत्साहित नहीं होगा, तो उसका प्रभाव मतदान तक स्वाभाविक रूप से दिखाई देगा. भाजपा के लिए यह समय आत्मरक्षा का नहीं, बल्कि आत्ममंथन का है. पार्टी का इतिहास बताता है कि उसने चुनावी झटकों से सीख लेकर स्वयं को और अधिक मजबूत बनाया है. यदि संगठन कार्यकर्ताओं की भावनाओं को गंभीरता से सुने, शिक्षा और युवाओं से जुड़े मुद्दों पर अधिक संवेदनशीलता दिखाए, पारदर्शिता के प्रश्नों का समयबद्ध समाधान करे और अति आत्मविश्वास से बचे, तो यह हार भविष्य की बड़ी सफलता का आधार भी बन सकती है.

लोकतंत्र में जनता समय-समय पर संकेत देती है. बुद्धिमान राजनीतिक दल वही होता है, जो इन संकेतों को हार या जीत के चश्मे से नहीं, बल्कि सुधार के अवसर के रूप में देखे. बांकीपुर और दतिया के नतीजे भाजपा के लिए भी ऐसा ही संदेश लेकर आए हैं.

दिल्ली डायरी

सुर्खियों में है युवाओं को समर्पित प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की विडियो

प्रवेश कुमार मिश्र

दिल्ली के जंतर-मंतर पर पेपर लीक प्रदर्शन की समाप्ति के बाद प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा लगातार छोटे छोटे विडियो के माध्यम से युवाओं को साधने का प्रयास खासा सुर्खियों में रहा. मोदी की इस स्टाइल की चौतरफा सराहना हुई. विपक्षी दलों के नेताओं द्वारा भी युवाओं से सीधे संवाद के इस अंदाज को खूब सराहा गया. राजनीतिक गलियारों में चर्चा है कि मोदी ने जेन-जी से सीधे संवाद करने का जो तरीका अपनाया उसका फायदा भले ही तत्काल नहीं दिखाई दे रहा हो लेकिन उनके इस पहल को सरकार के सोच में आए बदलाव के रूप में देखा जा रहा है. युवाओं और जेन-जी से सीधे संवाद साधने के लिए मोदी द्वारा इंस्टाग्राम पर अपलोड किया गया वर्टिकल वीडियो भी मोदी के दूरगामी सोच को परिलक्षित कर रहा है.

संसद परिसर में पप्पू यादव का प्रतीकात्मक नाटक पर बवाल

संसद परिसर में पूर्णिया से निर्दलीय सांसद पप्पू यादव द्वारा साधु या पुजारी के वेश में किया गया प्रतिकात्मक विरोध भले ही अयोध्या राम मंदिर में चढ़ावे की कथित चोरी के मुद्दे पर अनूठा विरोध प्रदर्शन था , लेकिन इस प्रदर्शन के बाद लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने संसद परिसर में इस तरह भेष बदलने पर कड़ी आपत्ति जताई. जहां एक तरफ भाजपा ने इसे शर्मनाक ड्रामा करार दिया और कहा कि जो लोग चोरी के आरोप में पकड़े गए हैं उनका संतों से कोई लेना-देना नहीं है वहीं विपक्ष ने इसे प्रतिकात्मक विरोध बताकर बचाव किया. हालांकि कुछ विपक्षी दलों के नेताओं ने वेश भूषा पर अपनी असहमति व्यक्त करते हुए कहा कि चोरी करने वालों में कोई साधु नहीं है. जबकि पप्पू यादव ने देश के विभिन्न हिस्सों में हुए मुकदमों पर अपनी सफाई पेश करते हुए कहा कि उनका उद्देश्य भगवान के नाम पर धोखा करने वाले लुटेरों को उजागर करने का था.

पीके की जीत से सकते में भाजपाई रणनीतिकार

बिहार के बांकीपुर विधानसभा सीट पर हुए उपचुनाव में जनसुराज पार्टी के संस्थापक प्रशांत किशोर की जीत ने भाजपाई रणनीतिकारों को गहरे सकते में डाल दिया है. पिछले 3 दशकों से भाजपा का अभेद्य किला रही इस शहरी सीट पर मिली हार के बाद भाजपा रणनीतिकार आत्म-समीक्षा कर रहे हैं. देशव्यापी छात्र और युवा आंदोलनों के ठीक बाद हुए इस चुनाव में, शहरी और पढ़े-लिखे मतदाताओं ने जिस तरह से भाजपा से दूरी बनाई उसको लेकर रणनीतिकार हैरान हैं. उनका मानना है कि महज दस महीने पहले जिस सीट पर भाजपा को बंपर बढ़त मिली थी, वहां वोटरों का इतनी जल्दी पूरी तरह छिटकना भविष्य के लिए खतरे की घंटी है. इसलिए पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष नितिन नवीन ने पार्टी के वरिष्ठ रणनीतिकारों से भविष्य की योजना को लेकर मंथन आरम्भ कर दिया है.

आंदोलनों से भाजपा चिंतित

देश के विभिन्न राज्यों में युवाओं, किसानों और सामाजिक समूहों द्वारा सुलगते जन आंदोलनों ने भाजपाई रणनीतिकारों की चिंता बढ़ा दी. दिल्ली के बाद उत्तर प्रदेश, बिहार, उत्तराखंड जैसे राज्यों में छात्रों द्वारा आरंभ किया गया आंदोलन, हरियाणा में किसानों का आंदोलन, राजस्थान में आरक्षण खत्म करने को लेकर आंदोलन, महाराष्ट्र में मराठा आरक्षण को लेकर हो रहे आंदोलन ने भाजपाई रणनीतिकारों की चिंता बढ़ा दी है. चर्चा है कि उक्त मुद्दों को ध्यान में रखते हुए पार्टी रणनीतिकार राज्य सरकारों से लगातार संपर्क में हैं. ऐसे आंदोलनों पर बल प्रयोग करने के बजाय वार्ता को बेहतर माध्यम बनाने को कहा जा रहा है. पार्टी को चिंता है कि यदि इस तरह से आंदोलन का विस्तार होने लगेगा तो निश्चित रूप से पार्टी के लिए आने वाले चुनावों में नुकसान पहुंच सकता है.

राहुल के आक्रामक रुख से कांग्रेसी गदगद

लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने जिस तरह से संसद के अंदर और बाहर छात्रों के मुद्दों को आक्रामक अंदाज के साथ उठाना आरंभ किया है उससे कांग्रेसी रणनीतिकार गदगद हैं. पार्टी राहुल गांधी की इस आक्रामक रणनीति को भविष्य की राजनीति के लिए न? सिर्फ बेहतर मान रही है बल्कि इसके माध्यम से जनता के बीच पार्टी के प्रति बढ़ता विश्वास दिख रहा है. क्योंकि राहुल ने छात्रों व युवाओं को साधने के लिए जिस तरह उनके बीच जाकर संवाद आरंभ किया है उससे युवा मतदाताओं के बीच एक बार फिर कांग्रेस की स्वीकृति बढ़ रही है.

ऐसा तो होना ही था — नितिन नबीन ने कुछ हटकर नवीन कर दिया

राजीव खंडेलवाल
(लेखक कर सलाहकार एवं पूर्व अध्यक्ष, बैतूल सुधार न्यास)

हार का संदेश : अंहकार नहीं आत्ममंथन– एक हार आगे का मार्ग भी 'प्रशस्त' करती है, जो भविष्य की भूमिका को भी रचती है. 2024 के लोकसभा के बाद से भारी बहुमत से लगातार जीत भाजपा के सिर पर चढ़कर, सातवें आसमान पर पहुंचाकर घमंडी बना देती हैं.' इस एक हार ने इस अहंकार को रोकने व सोचने के लिए मजबूर कर दिया. लगातार जीत विरोधी पक्ष व आम जनता की जीवन व्यापन करने के लिए आवश्यक सामान्य जरूरतों को अनसुनी कर देते हैं. यह हार भाजपा नेतृत्व को वापिस धरातल की ओर लाएगी, ताकि चौकन्ना होकर आगामी महत्वपूर्ण उत्तर प्रदेश के चुनाव में पुनः विजयी झंडा गाड़ सकें. निश्चित रूप से भाजपा नेतृत्व इस हार से सीख लेकर और अधिक 'लोकतांत्रिक होकर जनोन्मुखी बनेगी'.

देश के तीन दिशाओं के तीन राज्यों मध्य प्रदेश (मध्य, हृदय प्रदेश) बिहार (पूर्व) और गुजरात (पश्चिम) में हुए उपचुनावों के परिणाम पर एक लाइन की प्रतिक्रियाटु देश के लोकतांत्रिक स्वास्थ्य को मजबूत, सुरक्षित करने के लिए ये तो होना ही था. वैसा हमेशा यह दावा किया जाता रहा है कि लोकतांत्रिक चुनाव परिणाम देश के लोकतंत्र को ही मजबूत करते हैं, जो कई बार 'धरातल पर सही नहीं उतरता है'. लेकिन इन परिणामों ने निश्चित रूप से वास्तविक अर्थों में लोकतंत्र की जड़ों को सींचा है. आइये! इसका अर्थ समझने का प्रयास करते हैं.

बिहार के बांकीपुर में जन सुराज पार्टी के प्रशांत किशोर की लगभग 19 हजार (लगभग 50 प्रतिशत मत 49.19), मध्यप्रदेश के दतिया में कांग्रेस के घनश्याम सिंह की 6 हजार से अधिक और गुजरात की मंजलपुर विधानसभा से भाजपा की 30 हजार से अधिक मतों से जीती है. वर्तमान में 2 विधानसभा सीट भाजपा और 1 कांग्रेस के पास थी, जहां भाजपा को इन उपचुनावों में एक सीट का नुकसान रहा. गुजरात का चुनाव परिणाम अपेक्षित था, जो राजनीति पर विशेष प्रभाव नहीं डालता है. यद्यपि यहां पर भाजपा की लीड एक लाख से घटकर 30000 पर आ गई. शेष दोनों अनेपक्षित परिणामों में बांकीपुर का अभी विश्लेषण किया जा रहा है. दतिया का अगले लेख में.

यह चुनाव परिणाम पक्ष (सत्ता) व विपक्ष दोनों को ऊर्जा प्रदान करता हुआ सजग करता है व आंखें खोलने वाला है:- सर्वप्रथम बात भाजपा की कर ले. प्रारंभ से ही भाजपा के लिए निम्न पांच 'अपशगुन' रहे.

(ए). पूर्व घोषित उम्मीदवार अभिषेक कुमार 'बंटी' को बदलकर, नीरज कुमार को लाया. राष्ट्रीय अध्यक्ष की सीट पर मंडल अध्यक्ष को उम्मीदवार बना दिया.

(बी). नीतीश कुमार के चेहरे के बिना पहला चुनाव था. मानों भाजपा के 'सिर से राजनीतिक छतरी हट गई'.

(सी). कांग्रेस ने आरजेडी गठबंधन से हटकर प्रशांत किशोर का समर्थन किया.

(डी) भाजपा अध्यक्ष नितिन नबीन का चुनावी प्रचार के दौरान यह बयान कि 'देश में नए 'वायरस और कॉकरोच' जैसी पार्टियां उभर रही हैं, जिनका मकसद देश को नष्ट करना है', का भी विपरीत प्रभाव पड़ा.

(ई) कुछ हलकों में यह भी कहा जा रहा है कि आरजेडी ने चुनावी मैदान में उम्मीदवार उतारने के बावजूद पर्दे के पीछे प्रशांत किशोर का अप्रत्यक्ष साथ दिया. मतलब विपक्षी मतों का अप्रत्याशित ध्रुवीकरण हुआ.

पीएम के बॉस (स्वयं प्रधानमंत्री के कथनानुसार), भाजपा के नवनियुक्त राष्ट्रीय अध्यक्ष, नितिन नबीन की यह परंपरागत सीट है, जहां से वे लगातार 5 बार जीते और इसके पूर्व उनके स्वर्गीय पिताजी भी 4 बार लगातार विजयी हुए थे. उपचुनाव की सामान्य सिद्धान्त व परिपाटी यही रही है कि अधिकतर सत्तापक्ष ही जीतती रही है. बावजूद इसके निश्चित रूप से बांकीपुर की हार चुनावी न होकर एक राजनैतिक संकेत है, जिसे भाजपा को एक 'निर्णायक संदेश' के रूप में लेना चाहिए. आंकड़ों की दृष्टि से 7 महीने पूर्व हुए विधानसभा चुनाव में भाजपा को प्राप्त प्रचंड बहुमत (202 सीटे) के आंकड़े को यह एक हार प्रभावित नहीं करेगी. लेकिन राजनीति में कई बार 'एक चिंगारी भी बड़ा संदेश दे जाती है'

पिछले चुनाव में दूसरे नंबर पर रहने वाली आरजेडी की वही प्रत्याशी की इस बार जमानत जप्त हो गई. 23% वोट पाकर 25 विधानसभा सीटें जीतने वाली राजद के नेता तेजस्वी यादव को पीके से सीखना चाहिए. 3.38% मत और निरंक सीट के बावजूद शेर की मांद में जाकर हरा कर एक तीर से कई निशाने पीके ने साध लिए. पीके की जीत की तुलना 1977 में लोकसभा चुनाव में इंदिरा गांधी व कांग्रेस पार्टी की उत्तर भारत में हुई बुरी तरह की हार तथा तत्पश्चात तुरंत हुए विधानसभा चुनाव में भी कांग्रेस की हार के मात्र 1 वर्ष बाद उत्तर प्रदेश में आजमगढ़ में हुए लोकसभा उपचुनाव में कांग्रेस की मोहसिना क़िदवई की जीत से की जा सकती है, जहां उपचुनाव में प्रचार करने इंदिरा गांधी स्वयं गई थी. पी के: 'कुछ नहीं' से आम न होकर 'खास' हो गए. पिछले विधानसभा चुनाव में बुरी तरह से हारी, मात्र 3:38 प्रतिशत वोट पानी वाली एक भी सीट न जीतने वाली जन सुराज पार्टी, की विधानसभा में यह पहली जीत प्रशांत किशोर के मनोबल को ताकत व 'मंसूबों' को पंख देगी.

भारत में लगेंगे बड़े एआई डाटा सेंटर्स

भारत आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) की दौड़ में कदापि पीछे नहीं रह सकता. यह क्रांतिकारी तकनीक उसके विकास के लिए अत्यावश्यक है. अच्छी बात यह है कि विश्व की बड़ी टेक कंपनियां भारत के डाटा सेंटर्स में भी निवेश कर रही हैं. अमेजन 5 वर्षों में 35 अरब डॉलर निवेश करेगी. गूगल ने 15 अरब डॉलर तथा माइक्रोसॉफ्ट ने 17.5 अरब डॉलर का निवेश घोषित किया है. सावधानी व सतर्कता की बात है कि भारत में जो डाटा जनरेट होगा, उसे यहीं संग्रहित किया जाएगा, न कि विदेशी इकाइयों में! एआई सिस्टम को प्रचुर कंप्युटिंग पावर की आवश्यकता होती है जिसे केवल हाइपरस्केल डाटा सेंटर उपलब्ध करा सकते हैं. इसलिए हाइपरस्केलर की उपयोगिता है जो सभी के लिए जरूरी है. विश्व की बड़ी आईटी कंपनियां इन्हें निर्मित कर सकती हैं. हर नई प्रौद्योगिकी का कहीं न कहीं विरोध होता है. अमेरिका में अनेक स्थानों पर नए डाटा सेंटर्स के विरोध में प्रदर्शन हुए. प्रदर्शनकारियों का कहना था कि डाटा सेंटर बहुत अधिक बिजली और पानी इस्तेमाल करते हैं तथा बड़ी जगह घेरते हैं. इनकी इमारतें अनाकर्षक या बदसूरत होती हैं. इनसे पर्यावरण की समस्या उत्पन्न होती है. इसके जवाब में गूगल ने कहा है कि वह 2030 तक नई तकनीक वाले हाइपरस्केलर लाएगा, जिनमें पानी के उपयोग की आवश्यकता नहीं पड़ेगी. शुरुआत में बने डाटा सेंटर उनमें पैदा होने वाले भारी ताप को नियंत्रित करने के लिए पानी का बहुत ज्यादा इस्तेमाल करते थे, जो भाप बनकर उड़ जाता था. इससे जलसंसाधनों की कमी होने का खतरा था. अब एयरफ्लो प्रबंधन या हीट एक्सचेंजर की तकनीक आ गई है. पंखे की स्पीड तथा वर्कलोड कम करने से ऊर्जा एवं पानी की बचत की जा सकती है. कुछ एआई कंपनियां तो समुद्री जल को पेयजल बनाने की बातें कर रही हैं. लिक्विड कूलिंग के जरिए डाटा सेंटर के सभी कक्ष ठंडे रखने की योजना भी है. इतने पर भी यह तथ्य है कि डाटा सेंटर को 24 घंटे बिजली की जरूरत पड़ती है. इसलिए वह ग्रिड की बिजली पर निर्भर नहीं रह सकते. उन्हें अपने लिए बिजली बनाने, स्टोरेज और बैकअप की व्यवस्था खुद करनी होगी.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

निशानेबाज

दिल बहलाने के लिए ख्याल अच्छा वोट चोरी का आरोप कितना सच्चा

पड़ोसी ने हमसे कहा, 'निशानेबाज, विपक्ष बगैर किसी ठोस सबूत के बीजेपी पर आरोप लगाता है कि वह इतने वर्षों से वोट चोरी कर सरकार बना रही है. चौकीदार को चोर कहकर अपनी झुंझलाहट दिखाता है. यह सब क्या चल रहा है?'

हमने कहा, 'मिर्जा गालिब का शेर है- हमको मालूम है जन्नत की हकीकत लेकिन दिल बहलाने के लिए गालिब ख्याल अच्छा है. बीजेपी नेता मानते हैं कि विपक्ष की हालत खिसियानी बिल्ली खंभा नोचे जैसी हो गई है. वह खुद को सत्ता का हकदार मानता है और अपनी विफलता पचा नहीं पा रहा है. इसलिए वह दिल बहलाने के लिए वोट चोरी का आरोप दोहराने लगा है.'

पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, दिल बहलाने के और भी रास्ते हैं वोट चोरी पुराने राजा-महाराजा दिल बहलाने के लिए शिकार खेलने जाते थे या जुआ खेलते थे. आम जनता तमाशा और नौटंकी देखकर मन बहलाती थी. फिर सिनेमा और टीवी से दिल लगा बैठी. अब लोग मोबाइल से चिपक

गए हैं. दिल बहलाने के लिए लोग क्लब से कैबरे तक जाते हैं या बार को गुलजार करते हैं.' हमने कहा, 'जनता भी अपने दिल की बात सुनकर किसी पार्टी को वोट देते हुए कहती है- दिल भी तेरा, हम भी तेरे! जब दिल अपना और प्रीत पराई हो जाती है तो लोकप्रिय नेता भी चुनाव हार जाता है. चुनाव में पैसे का खेल होता है इसलिए उम्मीदवार पूछता है- यार दिलदार तुझे कैसा चाहिए, प्यार चाहिए कि पैसा चाहिए! पैसा बांटने वाली खैराती योजनाओं की बदौलत चुनाव जीते जाते हैं. जो पार्टी हार जाती है, वह कहती है- दिल के अरमां आंसुओं में बह गए, हम वफा करके भी तन्हा रह गए! सत्ता के लिए बेमेल गठबंधन बनाते समय कहा जाता है- दिल से मिला के दिल प्यार कीजिए, कोई सुहाना इकरार कीजिए !

सहयोगी पार्टी कहती है- मेरे दिल में आज क्या है, तू कहे तो मैं बता दूं. खुद को सेक्यूलर बताने वाले नेता किसी सांप्रदायिक पार्टी से गठबंधन कर लेते हैं तो उनकी भावना रहती है- हम आज कहीं दिल खो बैठे, यूं समझो किसी के हो बैठे ! सत्ता से बाहर हो जाने वाला दुखी नेता गुनगुनाता है- फिर वही शाम वही गम वही तन्हाई है, दिल को बहलाने तेरी याद चली आई है!'

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12340 - डॉ. सागर खादीवाला

1	2	■	3		4	■	5
6		■		■	7		
	■	8		9		■	
10			■		■	11	
■	■	12			13	■	■
14	15		■	16			17
18		■	19			■	
	■	20			■	21	

ऊपर से नीचे

1. तमाशा या खेल दिखाने वाला, नट 2. प्रवाह, दफा, धार 3. बेसुध, बेपरवाह 4. पत्थर आदि का वह रंगीन चमकीला टुकड़ा जो शोभा के लिए आभूषण अंगूठी आदि में जड़ा जाता है 5. खड़-खड़ शब्द होना 8. शामत का मारा, हतभाग्य, बदकिस्मत 9. पर्दे में रहने वाली 13. दस बूटियों वाला ताश का पत्ता 14. नदी 15. लहू 17. बिहार राज्य के अंतर्गत एक प्राचीन स्थान जो बड़ा विश्व विद्यालय था 19. जुआठे में बंधी हुई रस्सी जिसमें बैलों की गर्दन फंसाई जाती है, बहुत बड़ी शहतीर

बाएं से दाएं

1. रुकावट, विघ्न, अड़चन 3. गाना, गीत 6. एक पौधा या उसके सुगंधित छोटे फल जो सुखाकर मसाले के काम में लाए जाते हैं, इस प्रकार की कोई छोटी महीन लंबी वस्तु 7. श्रृगाल, सियार 8. बिलखना 10. हिंदी के प्रसिद्ध कवि जिनके दोहे बहुत मशहूर हैं 11. पशु-शावक, बच्चा 12. सद्दाम हुसैन के देश की राजधानी 14. पेड़ 16. स्नान कराना 18. खाली 19. ओजपूर्ण, आवेशपूर्ण 20. औलाद 21. आनंद देने वाली, शुभ, दुर्गा का एक विग्रह

Solution 12339

सा	ब	र	म	ती	■	■	मां
न	न	द	■	स	भा	स	द
■	तु	■	स	रा	प	ना	■
ज	ल	या	न	■	■	त	न
र	सी	द	■	मे	ह	न	त
मु	■	■	भ	न	क	■	म
आ	शा	■	रा	का	■	अ	स्त
■	ल	गा	व	■	ना	ट	क

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में आर्थिक योजनाओं में लाभ होगा. पुरानी समस्याओं से छुटकारा मिलेगा. वर्ष के मध्यमें लिया गया निर्णय सार्थक होगा. शिक्षा प्रतियोगिता में सफलता मिलेगी. वर्ष के अन्त में कार्य क्षेत्र में वृद्धि होगी. भाईयों से मतभेद बढ़ेगे. कानूनी मामलों में भागदौड़ करना पड़ेगी.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को आर्थिक लाभ होगा. वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को कार्य क्षेत्र में व्यस्तता रहेगी. कर्क राशि के व्यक्तियों को पुरानी समस्याओं से छुटकारा मिलेगा. सिंह राशि के व्यक्तियों को शिक्षा प्रतियोगिता में सफलता मिलेगी. मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को आर्थिक योजनाओं में लाभ होगा. धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को महिला जाति की सलाह लेना हितकर रहेगा. मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को अपने स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहना हितकर रहेगा.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक स्वाभाव से अच्छा सुन्दर, हष्टपुष्ट तथा सुशील तथा मिलनसार होगा. मन भावुक तथा कोमल होगा. कम बोलेगा, तथा जोभी बात बोलेगा, वह बुद्धिमानी से परिपूर्ण होगी. पिता का भक्त होगा.

उदयकालीन ग्रह चाल

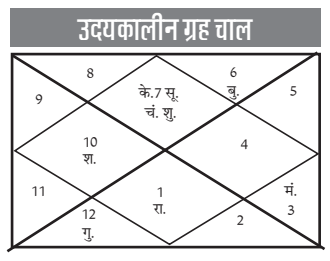

पंचांग

रा.मि. 14 संवत् 2083 श्रावण कृष्ण सप्तमीं बुधवासरे शाम 5/23, अश्विनी नक्षत्रे रात 7/13, शूल योगे दिन 4/25, विष्टि करणे सू.उ. 5/26, सू.अ. 6/34, चन्द्रचार मेष, शु.रा. 1, 3, 4, 7, 8, 11 अ.रा. 2, 5, 6, 9, 10, 12 शुभांक- 3, 5, 9.

व्यापार भविष्य

श्रावण कृष्ण सप्तमीं को अश्विनी नक्षत्र के प्रभाव से गुड़, खांड़, रूई, शक्कर, कपास, जूट, पाट, बारदाना, सन, हैसियन, सोना, चांदी, के भाव में उठाल आयेगा. भाग्यांक 4110 है.

मेष- पारिवारिक आयोजन लाभकारी हो सकते है. आकस्मिक लाभ की सूचना मिलेगी. मानसिक प्रसन्नता रहेगी. कोर्ट कचहरी के कार्यों में सफलता प्राप्त होगी.

वृषभ- अपने कार्य को वरीयता से निपटाने का प्रयास करें, अन्यथा परेशानियां सामने आयेंगी. वरिष्ठ लोगों के संपर्क से लाभ होगा. भाग्यवर्धक समाचार मिलेगा.

मिथुन- वैभव के सामान पर बड़े खर्च की संभावना है. स्वजनों के सहयोग से आर्थिक कार्य पूर्ण होगा. मनोरंजन उत्साह बढ़ेगा. मेहनत अधिक करना पड़ेगी.

कर्क- नए कार्य की शुरूआत और कानूनी मामलों में सबकी सलाह से वृषभे बढ़े, सफलता मिलेगी. आकस्मिक प्रवास हो सकता है.

सिंह- धार्मिक कार्यो में व्यस्तता रहेगी. नये संपर्कों का लाभ मिलेगा. महत्वपूर्ण कार्यों में सफलता मिलगी. श्रेष्ठजनों से कामकाज बनने का योग है.

कन्या- प्रतियोगी परीक्षा में सफलता के आसार हैं, विवादास्पद मामले सुलझ सकते हैं. स्वास्थ्य अच्छा रहेगा. कार्यों में आकस्मिक गति आयेगी. मन में प्रसन्नता रहेगी.

तुला- दूसरों के मामले में दखल से बचें. अटके कार्य पूराकरने में मित्रों का सहयोग मिलेगा. संतान आदि की चिन्ता दूर होगीं सुखदकार्यों में लाभ प्राप्त होगा.

वृश्चिक- भाग्यवर्धक अवसर मिलेंगे. दिनचर्या व्यवस्थित रहेगी. परिश्रम अधिक करना होगा. आप जिन पर भरोसा कर रहे हैं, वे आपका विरोध करेंगे.

धनु- खानपान रहन सहन में अनियमितता रहेगी. उदर विकार आदि से कष्ट होगा. समय के कुछ मानसिक चिन्ता रहेगी. स्वरूप को देखकर कार्य करें.

मकर- आपके सरल स्वाभाव का लोग फायदा उठायेंगे. व्यापार व्यवसाय में सफलता मिलेगी. जीवनसाथी का सहयोग रहेगा. मानसिक प्रसन्नता रहेगी.

कुम्भ- आपका कठोर व्यवहार घर में कलह का कारण बन सकता है. नई योजना लाभकारी रहेगी. आकस्मिक अतिथि आगमन होगा. पार्टनरशिप में सतर्कता बांछनीय.

मीन- अधूरी योजना फिर से शुरू कर सकते हैं. बुजुर्गो के मार्गदर्शन से लाभ मिलेगा. मातृपक्ष से शुभ समाचार मिलेगा. कार्यो मे सफलता मिलेगी. संयम से काम लें.

SUDOKU 7472

		4			9			
	2			8	4			
8						3		
							9	4
	3						7	
5	6							
		7						9
			2	5			8	
			6			2		

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7471

5	9	1	2	8	4	3	6	7
6	4	2	3	5	7	9	1	8
8	3	7	9	6	1	4	2	5
4	7	5	8	2	6	1	9	3
3	6	9	7	1	5	8	4	2
1	2	8	4	3	9	7	5	6
7	5	6	1	9	8	2	3	4
9	8	3	5	4	2	6	7	1
2	1	4	6	7	3	5	8	9